आज का पुरुषार्थ 15 March 2023

Source: BK Suraj bhai **Website**: www.shivbabas.org

धारणा – *"लक्ष्य है बाप समान बनने का .. तो जैसे ब्रह्मा बाबा वैसे .. हमें भी प्यार बाँटना है .. सबकी प्यार से पालना करनी है "*

ब्रह्मा बाबा ने सभी को बहुत प्यार, **अपनापन** और **शुभ भावनायें** दी। जबसे बाबा प्रजापिता ब्रह्मा बने शिवबाबा ने उन्हें यह टाइटिल दिया। उनको गहन **स्मृति** हो गई, स्वरूप बन गया ...

" मैं प्रजापिता हूँ .. सब मेरे संतान है .. इसलिए मुझे सभी को प्यार बाँटना है .. सभी की पालना करनी है .. सभी के दुःख दूर करने है "

हम भी अपने बाबा को फालो करेंगे, हमें भी सभी को प्यार देना है। और यह प्यार हम तब दे सकेंगे, जब हमारे अंदर यह स्वमान रहेगा के ..

" **मैं पूर्वज हूँ .. इष्ट देव देवी हूँ** .. मास्टर ब्रह्मा हूँ .. सभी आत्माओं को हमारी प्यार की जरूरत है .. हम सृष्टि के बड़े है .. हमारे प्यार आत्मा को

शान्त करेगा .. **संतुष्ट** करेगा .. उनके आंतरिक **शक्तियों** को बढ़ायेगा .. उनको रिलेक्स करायेगा "

लौकिक में भी देख ले, जिन बच्चों को बड़ों से प्यार नहीं मिलता, उनकी मनोस्थिति, पूरा जीवन कैसी रहती है, उदास रहते है, खुशी का उनके जीवन में अभाव हो जाता है।

हम भी इस सत्य को जानते हुए सबको प्यार की दृष्टि दे, दूर से ही दे। और इसके लिए, न केवल आत्मिक दृष्टि की आवश्यकता है, पर यह संकल्प करे, के ..

" सभी आत्मायें हमारे ही है .. हमारे परिवार के है .. परमपिता के संतान है .. हमारे महान देव कुल के वंशज है "

" मेरे ही परिवार की महान आत्मायें मेरे सामने है .. **मेरे बच्चे बैठे है** " .. तो अटोमेटिकली प्यार के vibrations सब तक पहुँचते रहते है।

हम भी अपने को **श्रेष्ठ स्वमान** में स्थित करे, और बस बाबा से प्यार ले, दूसरों को दे।

और प्यार वही बाँट सकता है जिसके प्यार के भण्डारें सदा भरपूर हो। और प्यार बिल्कुल **निर्मल** हो, **निष्काम** हो, वासनाओं से मुक्त हो।

जिस प्रेम में वासनायें है वह तो वास्तव में प्रेम रहता ही नहीं। जिस प्रेम में स्वार्थ है, उस प्रेम की शक्ति भी नष्ट हो जाती है। जिस प्रेम में अपनापन नहीं है केवल दिखावा है, वह प्रेम भी दूसरी आत्माओं को बल नहीं दे सकता।

तो अपने बच्चों को भी **प्यार** दे, **सम्मान** भी दे, उनका आदर करे। अगर परिवार में प्यार का माहोल नहीं है, तो हम अपने दृष्टिकोण को चेंज करे। उनके प्रति **आत्मिक दृष्टि** अपनाये। ज़रा भी किसी के लिए मन में नफ़रत या घृणा आ गई हो उसको समाप्त करे।

आज सारा दिन यही हमारा पुरुषार्थ होगा, किसी के लिए भी हमारे मन में घृणा नफ़रत का भाव नहीं ..

" सब हमारे अपने है .. सबको हमें आगे बढ़ाना है "

और सारा दिन आत्मिक वृत्ति का अभ्यास करते हुए दूसरे के भी वृत्तियों को भी बदलेंगे। अपनी शुभ भावनाओं से। और सारा दिन सर्वशक्तिमान से

किरणें लेते रहेंगे। क्योंकि हमारे अंदर अगर **शक्तियाँ** होंगी तो वही हमारा प्यार दूसरों का **कल्याण** कर सकेगा।

" तो परमधाम में **शिवबाबा को सर्वशक्तिमान के रुप में विजुयालाइज करेंगे** .. उनके स्वरुप पर अपने बुद्धि लगायेंगे .. और अभ्यास करेंगे .. उनके शक्तियों की किरणें नीचे मुझमें आ रही है "

और फिर .. इन किरणों के मार्ग से ही →

" मैं आत्मा परमधाम में जाती हूँ .. और बाबा के पास बैठ जाती हूँ "

यही अभ्यास हर घन्टे में दो बार करेंगे और आज का दिन, दिन का आनन्द लेंगे।

।। ओम शान्ति ।।

BK Google: www.bkgoogle.org

Website: www.shivbabas.org